



International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519

IJSR 2022; 8(6): 01-04

© 2022 IJSR

www.anantaajournal.com

Received: 02-08-2022

Accepted: 06-09-2022

निमेश कुमार सिंह

शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

पण्डित मधुसूदन ओझा की दृष्टि में "अम्भोवाद"

निमेश कुमार सिंह

प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्व वाङ्मय में वेद सर्व प्राचीनतम ग्रन्थ हैं, जो भारतीय धर्म, संस्कृति तथा सभ्यता की आधारभूत नींव है। इसी प्रकार से भारतीय ज्ञान परम्परा भी सनातन काल से ही ज्ञान की अवच्छिन्न धारा प्रवाहित होती रही हैं चाहे वह विष्णु, रुद्रादि देवताओं का वर्णन हो या ब्रह्मविषयक ज्ञान, चाहे सृष्टियुत्पत्ति का वर्णन हो चाहे कर्मकाण्ड। इन समस्याओं के निराकरण हेतु विभिन्न भारतीय विद्वान हुए, यथा- सायण, यास्क, स्कन्दस्वामी, वैकटमाधव, मधुसूदन ओझा आदि। ये सभी सृष्टि के आदि एवं कारणभूत तत्त्व के प्रति हमेशा ही जिज्ञासु रहे हैं। जिनके फल-स्वरूप सभी ने सृष्टियुत्पत्ति विषयक नासदीय सूक्त¹ पुरुषसूक्त² आदि में इन विषयों का गूढ विवेचन किया। इन्हीं परम्पराओं में महान वेद विद्वान पण्डित मधुसूदन ओझा हुए, जिन्होंने अम्भोवाद आदि दशवादों का सिद्धान्त दिया और ये दशवाद किसी न किसी रूप में सृष्टियुत्पत्ति विषयक ही जानकारी देता है। पण्डित मधुसूदन ओझा के दशवादों में से "अम्भोवाद" अर्थात् अम्भः (जल) से ही सृष्टि का विकास किस प्रकार हुआ है, इस गूढ विषय पर इनके द्वारा अम्भोवाद में चर्चा की गयी है।

अम्भोवाद में वर्णित वेद के चार भाग

वेदों के सामान्यतः चार प्रभेद हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। परन्तु पण्डितमधुसूदन ओझा कृत "अम्भोवाद" में वेद को निम्न चार भागों में विभाजित किया गया है – 1- यज्ञ, 2- विज्ञान, 3- इतिहास, 4- स्तोत्र। अथवा कहा जा सकता है कि ये चारों भाग चारों वेदों का मुख्य विषय हैं। जैसा कि पण्डितमधुसूदन ओझा अम्भोवाद की भूमिका में बताया गया है -

यज्ञश्च विज्ञानमथेतिहासः स्तोत्रं तदित्थं विषया विभन्ताः।

वेदे चतुर्धात इमे चतुर्भिर्ग्रन्थैः पृथक्कृत्य निरुपणीयः।।³

यहाँ इतिहास को इतिवृत्त तथा स्तोत्र को स्तुति से पर्यायवाचक पद द्वारा प्रस्तुत किया गया है। पद्य इस प्रकार है -

Corresponding Author:

निमेश कुमार सिंह

शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

यज्ञोऽथ विज्ञानमथेतिवृत्तं स्तुतिस्तदित्थं विषया
विभक्ताः।⁴

इन चारों विषयों - यज्ञ, विज्ञान, इतिवृत्त तथा स्तुति को चार ग्रन्थों द्वारा निरूपित किया गया है तथा इन चारों विषयों में "विज्ञान" को जिस ग्रन्थ के द्वारा विश्लेषित किया गया, उस महान ग्रन्थ का नाम है- "ब्रह्मविज्ञान"। इस ब्रह्मविज्ञान को १२ वाद या बारह मतों के रूप में विभाजित किया गया है तथा "द्वादशवाद" ऐसा नाम दिया गया है। इन "द्वादशवादों" में "अम्भोवाद" का अन्यतम स्थान है। इस विषय में यह पद्य प्राप्त है -

“इतिवृत्तं सदसद् वा रजस्तथाकाशमपश्च
आवरणं च तथाम्भोऽथामृतमृत्यू अहोरात्रौ ॥
दैवः संशयवादः सिद्धान्तश्च श्रुतावुदिताः।
द्वादशवादा विहिताः शास्त्रेऽस्मिन् ब्रह्मविज्ञाने।⁵

द्वादशवाद

- | | |
|------------------|--------------------|
| (1) इतिवृत्तवाद, | (2) सदसवाद, |
| (3) रजोवाद, | (4) व्योमवाद, |
| (5) अपरवाद, | (6) आवरणवाद, |
| (7) अम्भोवाद, | (8) अमृतमृत्युवाद, |
| (9) अहोरात्रवाद, | (10) दैववाद, |
| (11) संशयवाद, | (12) सिद्धान्तवाद। |

यहाँ पर दशवादों में से छठा एवं द्वादशवादों में से सातवाँ वाद है - "अम्भोवाद"।

दशवाद

यद्यपि "अपरवाद" की भूमिका में डॉ. दयानन्द भार्गव एवं पण्डित मधुसूदन ओझा लिखते हैं कि पण्डित मोतीलाल शास्त्री ने ग्यारहवें "विज्ञानेतिवृत्तवाद" का भी नाम लिया है। इस प्रकार कुल मिलाकर ग्यारह वाद है जो पूर्वपक्ष के रूप में है तथा बारहवाँ "सिद्धान्तवाद" है जिसका उल्लेख "दशवादरहस्य" में तो है ही - इसके अतिरिक्त ब्रह्मसिद्धान्त नामक पृथक् ग्रन्थ में भी इसका विस्तृत विवरण है। दशवाद निम्न प्रकार से है -

- | | |
|------------------------|--------------|
| (1) विज्ञानेतिवृत्तवाद | (2) सदसद्वाद |
| (3) रजोवाद | (4) व्योमवाद |
| (5) अपरवाद | (6) आवरणवाद |

- | | |
|-----------------|-------------------|
| (7) अम्भोवाद | (8) अमृतमृत्युवाद |
| (9) अहोरात्रवाद | (10) दैववाद |

दशवादों का परिणाम आगे चलकर यह हुआ कि कुछ एक साध्य विद्वानों द्वारा "संशयवाद" का जन्म हुआ। दश सिद्धान्त होने के कारण यह निश्चित नहीं था कि सृष्टि का मूल क्या है? तब आगे चलकर "सिद्धान्तियों का सिद्धान्तवाद" प्रकरण में पुनः द्वादशवादों की चर्चा है।

सभी दसवादों अथवा द्वादशवादों में किसी न किसी रूप में सृष्टि के मूल एवं उससे सृष्टियुत्पत्ति का वर्णन है। जैसे - "व्योमवाद" अर्थात् व्योम से ही समस्त जगत् की उत्पत्ति हुई है और व्योम ही सृष्टि का मूलभूत कारण है। ठीक उसी प्रकार "अम्भोवाद" अर्थात् सृष्टि का आदितत्त्व अम्भ अर्थात् जल है और वही ब्रह्मरूप होकर सृष्टि की उत्पत्ति करता है। जैसा कि वेदान्त दर्शन में "ब्रह्म" द्वारा ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। परन्तु वेदान्तदर्शन में ब्रह्म द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति एवं अम्भोवाद की ब्रह्मविषयक अवधारणा दोनों अलग-अलग है।

अम्भोवाद का मूल

अन्य वादों की भाँति "अम्भोवाद" का भी मूल "नासदीय सूक्त" ही है। "अम्भः किमासीद् गहनं गभीरम्"।⁶ यह नासदीय सूक्त का प्रथम मंत्र का चतुर्थ पाद है। 'किम्' पद यहाँ प्रश्नवाचक है अर्थात् क्या सृष्टि के आरम्भ में सर्वत्र जल ही था? इसी का उत्तर "नासदीय सूक्त" के आगे के मंत्र में ऋषि वर्णन करते हुए कहते हैं कि जल ही सृष्टि का प्रथम तत्त्व था।⁷ पहले अम्भ को जगत् की कारणता स्वीकार करने वालों की लम्बी परंपरा थी।

अम्भोवाद

अम्भोवाद अर्थात् जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि "अम्भ" से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है तथा सृष्टि का मूलभूत तत्त्व भी अम्भ ही है।

अम्भ का स्वरूप एवं उससे सृष्टि-विकास

जगत् की उत्पत्ति पृथ्वी, अन्तरिक्ष व द्यौ के सम्मेलन से हुई है। सूर्य त्रिलोक का स्वामी है। सूर्य अप (समुद्र) से उत्पन्न व उसी में लीन हो जाता है। सूर्य के ऊपर व नीचे सर्वत्र 'अप' ही बुद्धिगोचर हो जाता है। इस प्रकार यह विश्व अपोमय सिद्ध होता है। अप् से उत्पन्न अग्निरूप सूर्य उन सर्वत्र व्याप्त अप् से इस विश्व का निर्माण करता है। त्रिवृत् रूप तीनों लोकों से बाहर एक चतुर्थ लोक है - अप्समुद्र। उसके गर्भ में ही यह अग्नि पैदा हुई है जो त्रिलोकी रूप में है। सब कुछ

अप्पय है। यथा भूमि का खनन करने पर अप का प्रत्यन्तर रूप (जल) ही प्राप्त होता है। अप् ही आकाश से वर्षा रूप में बरसता है -

य इहाभिखानेत् सोऽपो विन्दति भूमौ दिवश्च वर्षन्ति
ता यत् परमे स्थाने तिष्ठन्त्यत एव परमेष्ठी।
परमेष्ठिनोऽस्ति गर्भे सर्वं विश्वं ततः प्रसूतञ्च
ब्रह्मैतत् परमेष्ठी प्रभवस्थितिभंगकारणं तस्या॥⁸

परमेष्ठी के गर्भ में सब है, सम्पूर्ण विश्व उससे प्रसूत, उत्पन्न है। संसार के जन्म-स्थिति-नाश का कारण परमेष्ठी ब्रह्म है। यह जो कुछ भी जगत है, इसके मूल द्रव्य को विद्वान् 'ब्रह्म' नाम से जानते हैं। 'ब्रह्म' क्या है, इसके विचार में 'अम्भ' से भिन्न कोई ब्रह्म है यह विचारणीय ही नहीं है।

तिर्गतिश्चोर्ध्वगतिस्तथाधो गतिश्च तत्रम्भसि सर्गसिद्धा।
परं परं यद्यधिकावकाशं गृणाति सोर्ध्वा तनुता ततः स्यात्॥⁹

उस अम्भ में स्वभाव से ही तिर्यग्गति, ऊर्ध्व गति तथा अधोगति होती है। उत्तरोत्तर यदि अधिकावकाश प्राप्त करता है तो अम्भ की ऊर्ध्वगति है, उससे इसमें तनुता आती है। यदि अम्भ क्रमशः अल्पावकाश को प्राप्त करता है तो यह अधोगति होती है, उससे घनभाव पैदा होता है। उसकी गति के समभाव से तिर्यग्गति होती है, इससे न तनुता को प्राप्त करता है न घनता को ही प्राप्त करता है।

इस प्रकार 'अप' से तनुता के क्रम में अग्नि, वायु, वाक्, प्राण और मन विकसित होते हैं। इस प्रकार घनता के योग से क्रमशः पृथिव्याँ, वृक्ष व शरीर बनते हैं।

इत्थं तनुत्वक्रमतः प्रथन्तेऽग्निवायुवाक्प्राणमनांसि चाद्दम्भः।
घनत्वयोगात् क्रमतः पृथिव्यो वृक्षाः शरीराणि च सम्भवन्ति॥¹⁰

घन द्रव होकर तनुता को प्राप्त होता है एवं तनु द्रव होकर घनता को प्राप्त होता है। इस प्रकार यह चक्र चलता रहता है एवं इनके मध्य में इनका आलम्बन अम्भ है ऐसा समझना चाहिए -

आपो हि भूयिष्ठतमः पृथिव्यामपो हि भूयिष्ठतराः शरीरे।

भूयः प्रवर्षेण च भूयसान्नं ततो जगद्ब्रह्म निरूप्यतेऽम्भः॥¹¹

अर्थात्- अप् पृथ्वी में सर्वाधिक है, यह शरीर में भी (अन्य भूतों की अपेक्षा) अधिकतर है। अधिक वर्षा से अधिक अन्न होता है अतः अम्भ को 'जगद्ब्रह्म' वर्णित किया गया है।

निष्कर्ष

अतः नसदीय सूक्त की परम्परा का अनुसरण करते हुए पण्डित मधुसूदन ओझा ने दशवादों में से "अम्भोवाद" को प्रमुख माना है एवं अम्भः (जल) से ही सृष्टि का विकास माना है। पृथ्वी पर अप् की मात्रा इकहत्तर प्रतिशत है जो कि सर्वाधिक है, यह शरीर में भी लगभग साठ प्रतिशत (अन्य भूतों की अपेक्षा) अधिकतर है। अधिक वर्षा से अधिक अन्न होता है अतः अम्भ को 'जगद्ब्रह्म' वर्णित किया गया है। यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड जलमय है एवं जल के कारण ही इसकी सत्ता है। किसी भी पदार्थ में अगर जल की सत्ता न हो तो वह जुड़ा हुआ नहीं रह सकता है जैसे पत्थर एक मिट्टी का पिण्ड है जो जल के कारण जुड़ा हुआ है, परंतु अगर उसमें जल का अभाव हो जाए तो वह केवल मिट्टी मात्र रह जाएगा उसी प्रकार इस सम्पूर्ण सृष्टि को जल ने एक साथ जोड़ा हुआ है और अगर जल नहीं होगा तो ये पृथ्वी भी मिट्टी मात्र बन कर रह जाएगी और बिखर जाएगी। विज्ञान भी जल से ही सृष्टि का विकास मानता है और भविष्य में सृष्टि का विकास अन्य ग्रहों पर भी हो सके इस दृष्टि से वैज्ञानिक भी मंगल आदि ग्रहों पर जल की खोज कर रहे हैं। इसलिए जल ही जीवन है ऐसे वाक्य प्रचलित है। अतः इससे यह सिद्ध होता है की सृष्टि के आदि में जल था और जल से ही सृष्टि का विकास हुआ है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. अम्भोवादः भार्गव दयानन्द - जोधपुर एवरग्रीन प्रिण्टर २००२
2. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति -द्विवेदी, कपिलदेव. वाराणसी, चौखम्बा प्रकाशन - १९९५
3. ऋग्वेद संहिता - वेदमूर्ति तपोनिष्ठ, श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना - प्रकाशक (उ.प्र.)- २००५
4. <http://sanskrit.nic.in>
5. <http://shodhganaga.inflibnet.ac.in>
6. <http://hi.m.wikipedia.org.com>
7. <https://shankarshikshayatan.org>

¹ ऋग्वेद १०.१२९

2 वही १०, २०

3 अम्भोवाद, भूमिका पृ. - २८७

4 दशवादरहस्य, उपोद्धात

5 अम्भोवाद, भूमिका

6 ऋग्वेद १०.१२९.१

7 वही १०.१२९.३

8 दशवादरहस्यगतः अम्भोवाद-६, ७, ८

9 वही -९

10 वही -११

11 वही -१३